प्राप्ति स्थान : भारत में सर्वत्र पाया जाता है।

रासायनिक संगठन :

जंगली अश्वगंध की जड़ में सोम्नेफेरीन नामक एल्केलायड तथा खेती द्वारा उत्पन्न में शर्करा, फैट रेजिन तथा कुछ रंजकद्रव्य मिलते हैं।

गुण :

यह स्वाद में मीठा, कसैला, कडवा, पचने पर मधुर तथा हल्का चिकना गर्म है। इसका मुख्य प्रभाव सर्व शरीर पर रसायन के रूप में पड़ता है। यह शोपहर, पीडाहर, अग्निदीपक, कृमिहर, हृदय बलकारक रसायन, मूत्रजनक, चर्मरोगहर बलदायक तथा क्षयहर है। अश्वगंधा बीज में दूध जमाने की शक्तिहै।

औषधिय उपयोग :

श्वास – अश्वगंधा 3 माशा, जवाखार 2 रत्ती – शहद व घी के साथ

क्षय – अश्वगंधा 3 माशा, पिप्पली चूर्ण 1 माशा – घी व शहद के साथ

वातव्याधी – अश्वगंधा का काढा।

शिशु दौर्बल्य – अश्वगंधा मूल का चूर्ण, दूध–घी के साथ।

अन्य उपयोग :

अश्वगंधा बल्य, रसायन और अवसादक है। अश्वगंधा के मूल का चूर्ण दूध

अश्वगंधा अपने बच्चों को खिलाओ,
उनका दोर्बल्य दुर भागाओ।

मुद्रक : फाईन आर्ट प्रिन्टर्स, जाटवाड़ी, उदय. फो.: 0294-2411406, 94602 64241

अश्वगंधा

वैज्ञानिक नाम
विथैनिया सॉम्निफेरा

राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति
282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)
फोन एवं फैक्स : 0294-2451478
email: samarthak@sancharnet.in
Website: www.samarathak.org

अश्वगंधा

संस्कृत नाम : अश्वगंधा, बाजिगंधा

हिन्दी : असगंध

गुजराती : घोड़ा आहन, आसोंद

लेटिन : विथैनिया सॉम्निफेरा (पजींदपै वउदपतिं)

अंग्रेजी : विंटर चैरी (पदजत बेमततल)

परिचय :

इसका पौधा 1-5 फूट ऊँचा और शाखाएं चारो ओर फैली होती हैं। पत्ते 2-4 इंच लम्बे गोलाई लिये कुछ सफेद रोयेंदार होते हैं। फूल पीलापन लिये हरे रंग के गुच्छों में आते हैं। फल छोटे गोलाकार रसभरी की तरह भीतर पतली झिल्ली वाले होते हैं, जो पकने पर लाल हो जाते हैं, फलों में छोटे और चिपटे बीज रहते हैं। जड़ ऊपर से पीलापन लिये कत्थई अंदर से सफेद अंगुली जैसी मोटी लम्बाई में 1-1) फूल तक होती हैं।

मूल ऊपर से घूसर, भीतर श्वेत, दृढ़ अंगुलिसदृश मोटे तथा 1-1) फूट तक लंबे होते हैं, कच्चे मूल से अश्व के सदृश गंध आती है इसलिए इसे अश्वगंधा कहते हैं। शरद ऋतु में पुष्प और बाद में फल आते हैं। बरसात में इसके बीज बोये जाते हैं, तथा जाड़े में फसल निकाल ली जाती है।

षि तकनिक -

अश्वगंधा की खेती के लिए बलुई दोमट व हल्की लाल मिट्टी जिसका पी. एच. 7.5-8 तक हो उपयुक्त होती हैं। इसके लिए अच्छी जल निकासी वाली जमीन होनी आवश्यक है। यह खरीब फसल है, जिसके लिए 650-700 मिमि. वर्षा पर्याप्त है। अश्वगंधा की जवाहर असगंध - 20 किस्म, अच्छी गई है। अश्वगंधा, बीज द्वारा लगाया जाता है तथा इसकी फसल अवधि 4-5 माह हैं। एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिए असगंध के 10-12 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है। इसकी बुआई के लिए छिड़काव विधि सवश्रेष्ठ मानी गई है। हालांकि नर्सरी में बीज डालकर तैयार पौध का रोपण भी किया जाता है। बीजों का छिड़काव ज्यादा घना नहीं होना चाहिए तथा पौधों में 15-20 सेमी का अंतराल आवश्यक है। बुआई सितंबर से अक्टूबर के मध्य तक की जानी चाहिए। असगंध कम पानी की फसल है, इसलिए इसे माह में एक से ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं है।

फसल प्राप्ति

अश्वगंधा की फसल 150-170 दिन में तैयार हो जाती है। पत्तियों का सूखना व फलों का लाल होना इसका संकेत देते हैं कि फसल परिपक्व हो गई है। इसके विदोहन के लिए पूरा पौधा निकाल लिया जाता है। इसकी जड़ से 2 सेमी, ऊपर से तना काट कर अलग कर लिया जात है। जड़ों को धोकर 7-10 सेमी लंबाई के टुकड़ों में काट लिया जाता है तथा फलों को तने से अलग कर सुखा कर बीज एकत्र कर लिए जाते हैं।

फसल प्राप्ति प्रति हैक्टेयर

उपज प्रति हैक्टेयर	:	90 क्विंटल (सूखी)
विक्रय मूल्य	:	40-60 रु. प्रति किग्रा.
प्रति हैक्टेयर	:	50 किग्रा. (बीज)
विक्रय मूल्य	:	50-60 रु. प्रति किग्रा. (बीज)

उत्पत्ति स्थान :

महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब और हिमालय में 5000 फीट की ऊँचाई तक पाया जाता है। मध्यप्रदेश के मन्दसौर जिले की मनासा तहसील में इसकी सर्वाधिक खेती की जाती है।

प्रयोज्य अंग : मूल